❍ 25 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *कोई भी चीज़ अपने पास छिपाकर तो नहीं रखी ?*

➢➢ *मम्मा बाबा को पूरा फॉलो किया ?*

➢➢ *सर्व खाजनाओ को बांटते और बढ़ाते रहे ?*

➢➢ *हर कर्म अधिकारीपन के निश्चय और नशे से किया ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जब कर्मातीत स्थिति के समीप पहुंचेंगे तब किसी भी आत्मा तरफ बुद्धि का झुकाव, कर्म का बंधन नहीं बनायेगा।* आत्मा का आत्मा से लेन-देन का हिसाब भी नहीं बनेगा। वे कर्म के बन्धनों का भी त्याग कर देंगी।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न

दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं उड़ती कला वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को हर कदम में उड़ती कला वाली श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? *क्योंकि उड़ती कला में जाने का समय अब थोड़ा-सा है और गिरती कला का समय बहुत है। सारा कल्प गिरते ही आये हो। उड़ती कला का समय सिर्फ अब है। तो थोड़े से समय में सदा के लिए उड़ती कला द्वारा स्वयं का और सर्व का कल्याण करना है।*

〰✧ थोड़े समय में बहुत बड़ा काम करना है। तो इतनी रफ्तार से उड़ते रहेंगे तब यह सारा कार्य सम्पन्न कर सकेगे। *सिर्फ स्वयं का कल्याण नहीं करना है लेकिन प्रकृति सहित सर्व आत्माओंका कल्याण करना है। कितनी आत्मायें हैं! बहुत है ना। तो जब इतना स्वयं शक्तिशाली होंगे तब तो दूसरों को भी बना सकेगे। अगर स्वयं ही गिरते-चढ़ते रहेंगे तो दूसरों का कल्याण क्या करेंगे। इसलिए हर कदम में उड़ती कला।*

〰✧ चल तो रहे हैं, कर तो रहे हैं - ऐसे नहीं। जिस रफ्तार से चलना चाहिए, उस रफ्तार से चल रहे हैं? कर तो रहे हैं लेकिन जिस विधि से करना चाहिए, उस विधि से कर रहे हैं? कर तो सभी रहे हैं, किसी से पूछो - सेवा करते हो? तो सब कहेंगे - हाँ, कर रहे हैं। *लेकिन विधि वा गति कौनसी है - यह जानना और देखना है। समय तेज जा रहा है या स्वयं तीव्रगति से जा रहे हैं? सेवा की भी तीव्र विधि है या यथाशक्ति कर रहे हैं? इसलिए सदा उड़ते चलो। उड़ने वाले औरों को उड़ा सकते हैं।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ राजा बनने का युग है। राजा क्या करता है? ऑर्डर करता है ना? *राजयोगी जैसे मन-बुद्धि को ऑर्डर करे, वैसे अनुभव करें।* ऐसे नहीं कि मन-बुद्धि को ऑर्डर करो, फरिश्ता बनो और नीचे आ जाए तो राजा का आर्डर नहीं माना ना तो राजा वह जिसका प्रजा आर्डर माने।

〰✧ नहीं तो योग्य राजा नहीं कहा जायेगा। काम का राजा नहीं, नाम का राजा कहा जायेगा। तो आप कौन हो? सच्चे राजा हो। कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर मानती है? *मन-बुद्धि-संस्कार सब अपने ऑर्डर में हों।* ऐसे नहीं, क्रोध करना नहीं चाहता लेकिन हो गया।

〰✧ बॉडी कान्सेस होना नहीं चाहता लेकिन हो जाता हूँ तो उसको ताकत वाला राजा कहेंगे या कमजोर? तो *सदैव यह चेक करो कि मैं राजयोगी आत्मा, राज्य अधिकारी हूँ?* अधिकार चलता है? कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा नहीं देवे। आज्ञाकारी हो। अच्छा। (पार्टियों के साथ)

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ बापदादा आज देख रहे थे कि एकाग्रता की शक्ति अभी ज्यादा चाहिए। सभी बच्चों का एक ही दृढ़संकल्प हो कि अभी अपने भाई-बहनों के दु:ख की घटनायें परिवर्तन हो जायें। दिल से रहम इमर्ज हो। *क्या जब साइंस की शक्ति हलचल मचा सकती है तो इतने सभी ब्राह्मणों के साइलेन्स की शक्ति, रहमदिल भावना द्वारा व संकल्प द्वारा हलचल को परिवर्तन नहीं कर सकती। जब करना ही है, होना ही है तो इस बात पर विशेष अटेन्शन दो।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कर्मयोगी बन, हर कर्म में बाप को याद करना"*

➳ _ ➳ मीठे बाबा से देवताई लक्ष्य को पाकर,मै आत्मा... जीवन को मूल्यों से सजाने,गुणो और शक्तियो से भरने के लिए... मीठे बाबा की कुटिया में पहुंचती हूँ... प्यारे बाबा अपने वरदानों की बारिश में मुझे भिगो देते है...मै आत्मा इस मीठे चिंतन में डूब जाती हूँ कि... बिना बाबा के यह जीवन कितना सूना और खाली था... *आज प्यारे बाबा ने ज्ञान और याद की झनकार से जीवन को खुशियो से तरंगित कर दिया है..*. मै आत्मा हर साँस, हर कर्म में प्यारे बाबा को याद करती हुई, अपने मीठे भाग्य पर हर्षित होकर, मीठे नगमे गुनगुनाती हुई...हर कर्म में मीठे बाबा को साथी बनाकर... कर्म के हर प्रभाव से मुक्त हो गयी हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सच्चे प्यार की तरंगो में डुबोते हुए कहा :-* " मीठे प्यारे फूल बच्चे... मीठे बाबा की प्यारी यादो में रहकर हर कर्म को करो... यादो में हर पल डूबकर, कर्म को करेंगे तो स्वतः ही विकर्मो से बचे रहेंगे... *इसलिए हर साँस और संकल्प से यादो के तारो को जोड़कर, कर्मयोगी बनकर मुस्कराओ..*. यह यादे ही दुखो से मुक्त कराकर, खुशियो भरे स्वर्ग में पहुंचाएंगी..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से सच्चा प्यार पाकर, खुशियो में झूमते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा आपके बिना देह की मिटटी में लथपथ हो गयी थी... और दुखो से घिर गयी थी... *आज आपका हाथ और साथ पाकर पुण्यो से मेरा दामन भर गया है.*.. सदा ईश्वरीय यादो में खोयी हुई मै आत्मा... कर्म योगी बनकर मुस्करा रही हूँ...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी अथाह सम्पत्ति का मालिक बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता ने जो यादो का और ज्ञान का खजाना बाँहों में भरा है... *उनकी मीठी यादो में गहरे डूबकर, सदा ईश्वरीय प्यार को और शक्तियो को महसूस करो... और विकर्मो की कालिमा से परे रहो.*.. यह यादे ही सच्चा सहारा बनकर, इस विकारी दुनिया से बेदाग बनाकर, सच्ची खुशियो ले जाएँगी...."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की बाँहों में झूलते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा अपने मीठे भाग्य पर कुर्बान हूँ... जिसने मुझे यूँ भगवान से मिलवाकर... मेरा दामन अनन्त सुखो से खिलाया है... *विकारी जीवन की कालिख से छुड़वाकर... मेरे मन बुद्धि को सोने सा दमकाया है, और पावनता से मुझे महकाया है.*.."

❉ *मीठे बाबा ने मुझे गुणो और शक्तियो की अमीरी का बादशाह बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... सदा यादो की खुशबु में डूबे हुए, विकर्मो की बदबू से उपराम रहो... हर कर्म को यादो के तारो में पिरोकर करो... तो ईश्वरीय याद मायावी प्रभाव से सहज ही सुरक्षित करेगी... *मीठे बाबा की यादे ही सच्चा सुरक्षा कवच बनकर, देह की धूल से बचाएगी.*.. सच्चे प्रेम, शांति, और सुख भरी दुनिया का मालिक बनाएगी...'

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा के प्यार में खुशियो ले आसमाँ में उड़ते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे दुलारे बाबा... *आपने जीवन में आकर, जीवन को खुशियो के शिखर पर पहुंचाया है... जीवन को सच्चाई की खनक से भरकर, मुझे विश्व में सबसे ऊँचा उठाया है.*.. सच्चे प्यार को देकर मेरी जनमो की प्यास को बुझाया है... मै आत्मा रोम रोम से आपकी यादो में खोयी हुई हूँ..."मीठे बाबा को अपने दिल की दास्ताँ सुनाकर मै आत्मा अपनी देह में लौट आयी..."

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाबा जो खिलाये, जो पहनाये, एक शिव बाबा के भण्डारे से ही लेना है*"

➳ _ ➳ स्वयं भगवान की पालना में पलने वाली मैं खुशनसीब आत्मा एकांत में बैठ विचार करती हूँ कि कभी ख्वाबों, ख्यालों में भी नही सोचा था कि जिस भगवान के केवल दर्शन मात्र की प्यासी थी मेरी आँखें। *वो भगवान मेरे नयनों में आ कर बस जायेगा*। बाप बन स्वयं मेरी पालना करेगा। टीचर बन मुझे पढ़ायेगा और सतगुरु बन मुझे सत्य मार्ग दिखायेगा। *ऐसे भगवान बाप, टीचर, सतगुरु पर मुझे कितना ना बलिहार जाना चाहिए जिसने आकर मेरे मुरझाये हुए जीवन को हरा - भरा कर दिया*।

➳ _ ➳ सम्पूर्ण सृष्टि को चलाने वाले, ऑल माइटी अथॉरिटी भगवान बाप के भंडारे से मेरी पालना हो रही है। यह स्मृति ही मुझे एक अलौकिक नशे से भरपूर कर देती है और एक रूहानी मस्ती मुझ आत्मा पर सहज ही चढ़ने लगती है। *इस रूहानी मस्ती में खोई अब मैं स्वयं को मधुबन के पांडव भवन में एक छोटी सी बच्ची के रूप में देख रही हूँ*। कभी ब्रह्मा बाबा अपनी गोद मे बिठा कर मुझे टोली खिला रहें हैं, कभी मम्मा मुझे अपने हाथों से नहला - धुला कर तैयार कर रही है, सुन्दर - सुंदर कपड़े पहना रही है। मम्मा, बाबा की उंगली पकड़ कर मैं चलना सीख रही हूँ। *बड़े लाड़ - प्यार से मम्मा, बाबा मेरी पालना कर रहें हैं*।

➳ _ ➳ इस अति सुन्दर दृश्य को देख मन खुशी से सरोबार हो उठता है और मन ही मन मैं अपने भाग्य की सराहना करती हूँ कि *"वाह मेरा भाग्य वाह" जो आज भी बाबा अव्यक्त हो कर मुझे ऐसी पालना दे रहे हैं जिससे आज भी साकार पालना की ही भासना आती है*। अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य का गुणगान करती हुई अब मैं आत्मा अव्यक्त स्थिति में स्थित हो कर, साकारी देह को छोड़ अव्यक्त वतन में अपने अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने चल पड़ती हूँ।

➳ _ ➳ एक अति सुंदर लाइट की फ़रिशता ड्रेस धारण किये, चहुँ और *अपनी श्वेत रश्मियां फैलाते हुए मैं फ़रिशता अपने लाइट माइट स्वरूप में ऊपर की और उड़ रहा हूँ*।
कुछ ही क्षणों में मैं भू - लोक को पार कर, आकाश मार्ग से होता हुआ पहुंच जाता हूँ अव्यक्त वतन में अव्यक्त बापदादा के सामने।
मैं देख रहा हूँ मेरे सामने मम्मा बाबा बैठे हैं। मझे देखते ही बाबा इशारे से मझे

अपने पास बुलाते हैं।

➳ _ ➳ बाबा के पास पहुंचते ही मैं देखता हूँ मेरा स्वरूप अति सूक्ष्म हो गया है। एक नन्हे बच्चे की तरह मैं बाबा की गोदी में जा कर बैठ जाता हूँ। *अपना हाथ मेरे सिर पर रख कर बाबा अपनी सारी शक्तियां मेरे अंदर भरते जा रहें हैं*। बाबा की ममतामयी गोदी में मैं अवर्णनीय सुख की अनुभूति कर रहा हूँ। बाबा की गोदी में बैठे - बैठे ही मम्मा अपने हाथों से मुझे मीठी टोली खिला रही हैं।

➳ _ ➳ *मम्मा बाबा की अव्यक्त पालना ले कर, शक्तियों से भरपूर हो कर अब मैं फ़रिशता इस अव्यक्त वतन से वापिस साकारी दुनिया की और प्रस्थान करता हूँ*। फिर से आकाश मार्ग से होता हुआ वापस भू - लोक में प्रवेश करता हूँ और अपने सूक्ष्म लाइट के शरीर के साथ अपने साकारी तन में आ कर विराजमान हो जाता हूँ।

➳ _ ➳ अब मैं अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर सदा इस नशे में रहती हूँ कि मैं ईश्वरीय पालना में पल रही हूँ। *अपने ईश्वर बाप से मैं यह दृढ़ प्रतिज्ञा करती हूँ कि जो बाबा खिलायें वही खाना है, जो बाबा पहनाएं वही पहनना है, जो लेना है केवल शिव बाबा के भण्डारे से ही लेना है*। इसी प्रतिज्ञा को दृढ़ता के साथ पालन करते हुए अपने शिव बाबा की पालना में पलते हुए मैं अपने इस ईश्वरीय ब्राह्मण जीवन का भरपूर आनन्द ले रही हूँ।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं सर्व खजानों को बाटते और बढ़ाते सदा भरपूर रहने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं बालक सो मालिक आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा हर कर्म अधिकारीपन के निश्चय और नशे से करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा मेहनत करने से मुक्त हूँ ।*
✺ *मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ हाथ तो बहुत सहज उठाते हैं, बाबा को पता है हाथ उठवायेंगे तो बहुत प्रकार के हाथ उठेंगे लेकिन फिर भी बापदादा कहते हैं कि जिस चेकिंग से आप हाथ उठाने के लिए तैयार हैं, बापदादा को पता है कितने तैयार हैं, कौन तैयार हैं। *अभी भी और अन्तर्मुखी बन सूक्ष्म चेकिंग करो। अच्छा कोई को दु:ख नहीं दिया, लेकिन जितना सुख का खाता जमा होना चाहिए उतना हुआ? नाराज नहीं किया, राजी किया? व्यर्थ नहीं सोचा लेकिन व्यर्थ के जगह पर श्रेष्ठ संकल्प इतने ही जमा हुए?* सबके प्रति शुभ भावना रखी लेकिन शुभ भावना का रेसपान्स मिला? वह चाहे बदले नहीं बदले, लेकिन आप उससे सन्तुष्ट रहे? ऐसी सूक्ष्म चेकिंग फिर भी अपने आपकी करो और अगर ऐसी सूक्ष्म चेकिंग में पास हो तो बहुत अच्छे हो।

✺ *ड्रिल :- "अन्तर्मखी बन सक्ष्म चेकिंग करना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा इस देह की मालिक, देह में मस्तक के मध्य चमक रही हूँ... स्वयं को इस देह से अलग एक जगमगाते सितारे के रुप में देख रही हूँ... बाबा की याद में बैठी हूँ और और उनके प्यार में खो जाती हूँ... *बाबा से मिलने वाले सभी ख़ज़ानों और शक्तियों को याद कर रही हूँ... स्वयं को चेक भी कर रही हूँ कि इन सब ख़ज़ानों को कितना जमा किया है...*

➳ _ ➳ मैं कितनी भाग्यशाली आत्मा हूँ जो इस संगमयुग में अपने प्राण प्यारे बाबा से सम्मुख मिलन मनाती हूँ... बाबा ने जो मुझे अमूल्य ख़ज़ाने और शक्तियाँ दी हैं उन्हें अपने इस हीरे तुल्य जीवन मे यूज़ करते हुए निरंतर आगे बढ़ रही हूँ... बाबा का साथ और प्यार मुझे हर कदम पर महसूस होता है... मैं बाबा की छत्रछाया में रह हर कर्म करती हूँ... *हर आत्मा के प्रति शुभभावना रखती हूँ और मेरे प्योर वाइब्रेशन अन्य आत्मायें कैच करती हैं और मेरी ओर आकर्षित होती हैं और मैं आत्मा उन सभी को अपनी शीतल दृष्टि से संतुष्ट करती हूँ...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा इस सृष्टि के रंगमंच पर अपना पार्ट प्ले करते हुए अन्य बहुत सी आत्माओं के संपर्क में आती हूँ... और हर आत्मा अपने स्वभाव संस्कार के अनुसार व्यवहार करती है... क्योंकि इस सृष्टि के अंत में सभी आत्माओं की बैटरी डिस्चार्ज है... *मैं आत्मा अपने संपर्क में आने वाली हर आत्मा को शुभ वाइब्रेशन दे उनके संस्कार परिवर्तन में उन्हें मदद करती हूँ...*

➳ _ ➳ मेरे संपर्क में आने वाली आत्माएं शांति का अनुभव करती हैं... वो अपने दुखों को भूल सुख का अनुभव करती हैं क्योंकि मैं आत्मा सुख स्वरूप हूँ... *कोई आत्मा अपने कड़े संस्कारों के कारण मुझसे अच्छा व्यवहार नहीं करती या नाराज़ रहती है उसे भी मैं शुभ भावना देकर उसे भी राज़ी करती हूँ...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा इस संगमयुग पर अपने पुराने सभी कलियुगी संस्कारों को परिवर्तन कर रही हूँ... *बाबा के साथ से उनके सहयोग से तेज़ी से मेरे संस्कार परिवर्तन हो रहे हैं... मैं आत्मा स्वयं पर अटेंशन रखकर साथ साथ

अपनी चेकिंग भी करती जाती हूँ...* मुझ आत्मा के किसी व्यवहार के कारण किसी को कोई दुख तो नहीं पहुंचा... मैं आत्मा अन्य आत्माओं के भी दुखों को दूर करती हूँ और अपना सुख का खाता जमा करती हूँ... *मैं आत्मा अंतर्मुखी बन अपनी सूक्ष्म चेकिंग करती हूँ... श्रेष्ठ संकल्पों का ख़ज़ाना जमा करती हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔